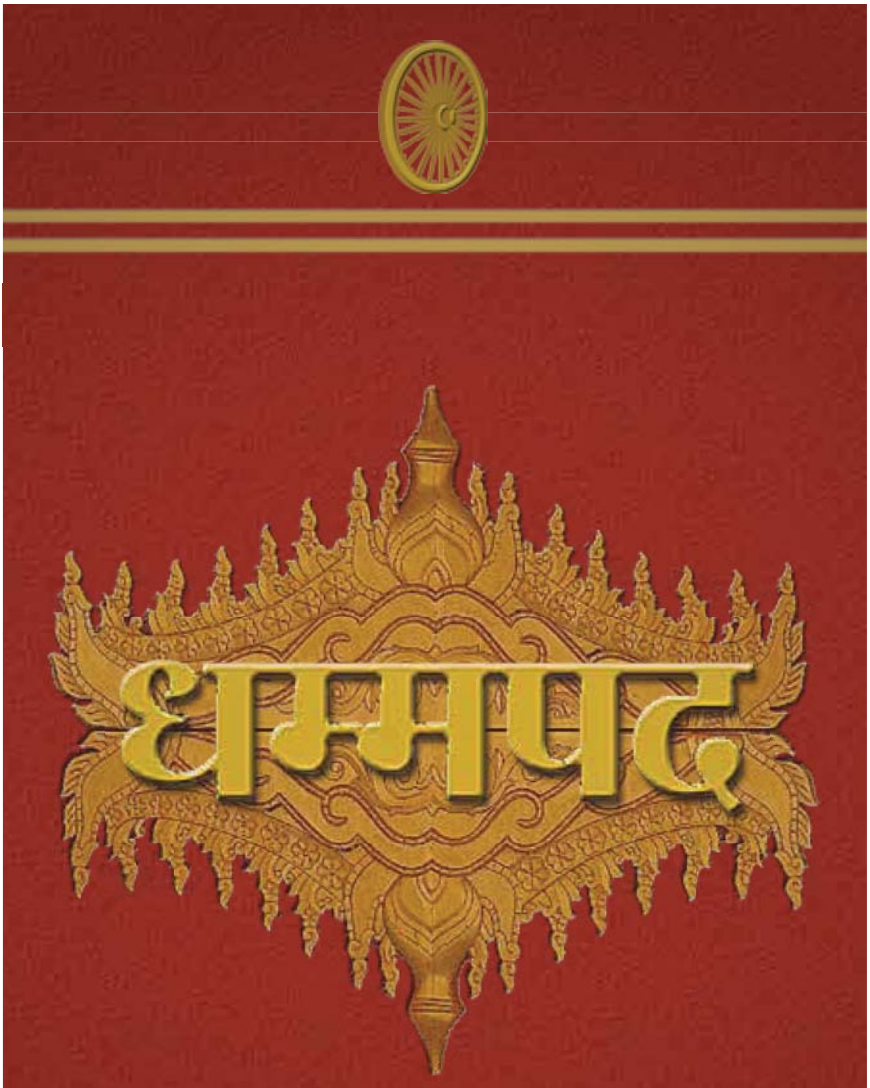

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मपद

(हिंदी अनुवाद सहित)

अनुवाद स. ना. टंडन

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

विषय-सूची

प्राक्कथन . . . . . **V**

१. यमकवग्गो १

२. अप्पमादवग्गो ५

३. चित्तवग्गो ८

४. पुप्फवग्गो १०

५. बालवग्गो १३

६. पण्डितवग्गो १६

७. अरहन्तवग्गो १९

८. सहस्सवग्गो २१

९. पापवग्गो २४

१०. दण्डवग्गो २७

११. जरावग्गो ३०

१२. अत्तवग्गो ३२

१३. लोकवग्गो ३४

१४. बुद्धवग्गो ३६

१५. सुखवग्गो ३९

१६. पियवग्गो ४२

१७. कोधवग्गो ४५

१८. मलवग्गो ४८

१९. धम्मट्ठवग्गो ५२
२०. मग्गवग्गो ५५
२१. पकिण्णकवग्गो ५९
२२. निरयवग्गो ६२
२३. नागवग्गो ६५
२४. तण्हावग्गो ६८
२५. भिक्खुवग्गो ७३
२६. ब्राह्मणवग्गो ७८
धम्मपदे वग्गानमुद्दानं ८७
गाथानमुद्दानं ८८
परिशिष्ट-१ . . . . . ८९
विपश्यना साहित्य ९४
विपश्यना साधना केंन्द्र ९७

प्राक्कथन

भगवान बुद्ध की अमर वाणी 'धम्मपद' का भाषानुवाद आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। विश्वभर के लोकप्रिय ग्रंथों में इसका बहुत ऊंचा स्थान है। विपश्यना के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इसकी लोकप्रियता और भी बढ़ती चली जायगी, इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है।

कल्याणमित्र विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी दस-दिवसीय विपश्यना शिविरों में साधना पक्ष को समझाने के लिए इसमें से बहुत से उद्धरण देते हैं। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि आपके लिए इस ग्रंथ का कितना महत्त्व है। ध्यान से देखा जाय तो इसकी एक-एक गाथा साधना पक्ष को मजबूत करने वाली और अगाध प्रेरणा जगाने वाली है।

'धम्मपद' में समूची बुद्धवाणी की कुंजी भी उपलब्ध है –

"यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं अगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुब्बतो॥

(गाथा ५१)

"यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं सुगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, सफला होति कुब्बतो॥"

(गाथा ५२)

"जैसे कोई पुष्प सुंदर और वर्णयुक्त होने पर भी गंधरहित हो, वैसे ही अच्छी कही हुई (बुद्ध-)वाणी होती है फलरहित, यदि कोई तदनुसार (आचरण) न करे।

"जैसे कोई पुष्प सुंदर और वर्णयुक्त हो और सुगंध वाला हो, वैसे ही अच्छी कही हुई (बुद्ध-)वाणी होती है फलसहित, यदि कोई तदनुसार (आचरण) करने वाला हो।"

इस प्रकार बुद्धवाणी फलप्रद तभी होती है जब कोई इसके अनुसार आचरण करे, इसे अनुभूति पर उतारे। यही बुद्धवाणी की कुंजी है।

उदाहरण –

"'सब्बे सङ्खारा अनिच्चाति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥"

(गाथा २७७)

"'सारे संस्कार अनित्य हैं' (याने जो कुछ उत्पन्न होता है वह नष्ट होता ही है)। इस (सच्चाई) को जब कोई (विपश्यना-)प्रज्ञा से देख (-जान) लेता है, तब उसको दुःखों का निर्वेद प्राप्त होता है (अर्थात, दुःख-क्षेत्र के प्रति भोक्ताभाव टूट जाता है) – ऐसा है यह विशुद्धि (विमुक्ति) का मार्ग!"

यदि कोई इस गाथा का दस, बीस, पचास या सौ बार पाठ ही करता रहे, तो इससे कोई लाभ नहीं होता; केवल बुद्धि का यत्किंचित परिष्कार होता है। जब इसी को अनुभूति पर उतार लेते हैं, तब अपरिमित कल्याण होने लगता है, सारे दुःखों से मुक्त होने का रास्ता मिल जाता है।

'धम्मपद' में ऐसी गाथाओं की भरमार है। इसीलिए विपश्यना विशोधन विन्यास ने बुद्धवाणी में से सर्वप्रथम इसी ग्रंथ का भाषानुवाद करने का निर्णय लिया। अब शनैः शनैः अन्यान्य ग्रंथों के भाषानुवाद का कार्य भी हाथ में लिया जायगा।

इस ग्रंथ में किये गये अनुवाद को आपके लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। अनुवाद सरल भाषा में है जिसे हर कोई समझ सके। साधना पक्ष को उजागर करने की भी पूरी चेष्टा की गयी है। गाथाओं के तात्पर्य को समझाने के लिए प्रचुर सामग्री कोष्ठकों में डाली गयी है। 'परिशिष्ट' के रूप में "धम्मपद" की गाथाओं से मेल खाते कल्याणमित्र द्वारा विरचित हिंदी **राजस्थानी दोहों** को भी ग्रंथ में सम्मिलित किया गया है जो न केवल प्रेरणादायक सामग्री का काम करते हैं बल्कि अपने अनूठेपन के कारण ग्रंथ की शोभा को भी चार चांद लगाते हैं।

ध्यान रहे कि समूची बुद्धवाणी को 'तिपिटक' के नाम से जाना जाता है। 'तिपिटक' के तीन बड़े विभाजन हैं – (१) विनयपिटक, (२) सुत्तपिटक तथा (३) अभिधम्मपिटक। इनमें से 'सुत्तपिटक' के अंतर्गत पांच निकाय हैं – दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय, अङ्गुत्तरनिकाय तथा खुद्दकनिकाय। 'खुद्दकनिकाय' के अंतर्गत १९ ग्रंथ हैं। इन १९ ग्रंथों में से एक है – 'धम्मपद'।

इस ग्रंथ का पालि-पाठ म्यंमा देश में सन १९५४-५६ में संपन्न हुए छट्ठ संगायन में स्वीकृत पाठ का अनुगामी है। इसी कारण यह सर्वथा प्रामाणिक है।

आशा है इस अनमोल ग्रन्थ का प्रकाशन विपश्यी साधकों, साधिकाओं, धर्म में अभिरूचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए लाभप्रद होगा।

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी